दादीमॉ

उन बूढ़ी ऑखों में क्या कोई सपना बसता है

हर पल हर शाम दूसरों की आस

हर घड़ी बस दूसरों के लिए सॉस

मुख पर झुर्रियॉ कमर का झुकाव

बढ़ी उमर और सफेद बाल

सब भुला न किए खुद की परवाह

न देखा कभी कोई सपना

कभी बच्चे तो कभी नातियों के लिए जीना

न कोई मॉग न इच्छा

देवी है वह करती जीवन सुनहरा

सचमें देवी है वह मेरी दादीमॉ

शोभित अग्रवाल